

શિવ ડપારના





COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

KAPWING

अनुक्रममणिका

| | |
|-------------------------------|-------|
| मुक्तिदाता शिवजी | 3-6 |
| ध्यान-श्लोकाः | 7 |
| प्रातःस्मरण स्तोत्रम् | 8-9 |
| द्वादश-ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम् | 10 |
| रुद्राष्टकम् | 11-14 |
| शिव-पंचाक्षर स्तोत्रम् | 15-16 |
| शिव-मानस पूजा स्तोत्रम् | 17-19 |
| शिवापराध-क्षमापन स्तोत्रम् | 20-25 |
| शिवताण्डव स्तोत्रम् | 26-31 |
| शिवमहिम्नः स्तोत्रम् | 32-48 |
| शिवपूजन विधि | 49-56 |
| शिव-अष्टोत्तरशत नामावली | 57-59 |
| आरती 1 | 60-61 |

मुक्तिदाता भगवान् शंकर

भगवान् शंकर साक्षात् मुक्तिदाता है। वे मुक्तिदाता न केवल अपने ब्रह्मविद्या के उपदेशों के कारण है; बल्कि अपनी तप, भक्ति एवं योग के प्रति निष्ठा, तथा सर्व प्रथम अपनी विलक्षण आकृति के कारण भी मुक्तिदाता हैं।

दुल्हे की तरह से आते हुए महादेवजी को देखकर पहले तो कुछ लोग हँसे; लेकिन जैसे जैसे वे निकट आए, लोगों की प्रतिक्रिया में सतत परिवर्तन होता गया। सर्पों से एवं भस्म से युक्त शरीर को देखकर डर लगने लगा। जो लोग महादेवजी को निकटता से जानते हैं, उनके अन्दर तो प्रभु के दर्शन से अत्यंत धन्यता एवं कृतार्थता उत्पन्न होती है। सांसारिक दृष्टि से देखने पर उनकी वेशभूषा अत्यन्त विलक्षण, डरावनी तथा अमंगलकारी प्रतीत होती है, लेकिन ये अमंगल रूपी भगवान् जब किसी पर कृपादृष्टि मात्र डालते हैं तो वह मंगल का धाम हो जाते हैं।

भगवान् शिव उन समस्त वस्तुओं से युक्त हैं जिन्हें हम सांसारिक दृष्टिकोण से निकृष्ट, अमंगल एवं हेय समजते हैं, लेकिन इसके बावजूद वे आनन्द, शक्ति, विद्या, भक्ति आदि समस्त गुण एवं ऐश्वर्य की मूर्ति हैं। यह विरोधाभास किसी के भी मन को झकझोर देता है। हम सब देखा-देखी में इन मान्यताओं से युक्त होकर जीते रहते हैं कि हमारी वेशभूषा एवं रहन-सहन अगर विशिष्ट ऐश्वर्य से युक्त नहीं है तो हम बहुत छोटे, असहाय एवं असमर्थ

व्यक्ति हैं। हम पहले किसी वस्तु पर महत्त्व आदि आरोपित करते हैं, तदुपरान्त इसकी प्राप्ति में प्रसन्न एवं अप्राप्ति में दुःखी होते रहते हैं। मूल समस्या अपनी इष्ट वस्तु की अप्राप्ति नहीं है, बल्कि अपनी निराधार मान्यताओं की। हम लोगों ने जीवन में अनेकों बार अपनी इष्ट वस्तुओं की प्राप्ति करी है एवं अनिष्ट को दूर रखने में भी सफल हुए हैं, लेकिन तब भी ब्राह्मी कृतार्थता से दूर हैं। महादेवजी की वेशभूषा एवं रहन-सहन हमें अपनी मान्यताओं के बारे में झकझोर देती है और पुनरालोकन की प्रेरणा देती है। जो मनुष्य अपनी निराधार मान्यताओं से मुक्त हो जाता है-वे ही वस्तुतः मुक्त होते हैं। अतः शास्त्र ये कहते हैं कि 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः।' निवृत्ति के मूर्तिमान भगवान शिवजी का समस्त जीवन हमारी मिथ्या मान्यताओं पर प्रहार करते हुए हमें उनसे मुक्ति की प्रेरणा एवं मार्ग दिखाता है।

प्रवृत्ति में उलझे मनुष्य को निवृत्ति की आवश्यकता एवं प्रेरणा देता हुआ भगवान का रूप एवं धाम सर्व-प्रथम हम सब को तपस्या, एकान्त वास एवं प्रकृति प्रेम की प्रेरणा देता है। भगवान शंकर प्रकृति के बहुत बड़े प्रेमी हैं अतः वे कैलास जैसे स्थान में वास करते हैं। जो भी मनुष्य प्रकृति से दूर होगा वह संसार में उलझता ही चला जाएगा। भगवान शंकर के भक्त प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त स्थानों में जाकर न केवल उसका दिव्य आनन्द लेते हैं बल्कि ऐसे स्थानों में तपस्वी की तरह से रहते हुए अपने शरीर की अनेकों पराधीनता से युक्त आदतों से मुक्त होते हैं। ऐसे संवेदनशील तपस्वी भक्त अपने मन में गहराई तक भिन्न भिन्न चीजों से मुक्त होकर रहते हैं। प्राकृतिक स्थानों में तपस्वी की तरह रहने से मनुष्य निडर एवं अहिंसक हो जाता है। वह ईश्वर का प्रगाढ़ भक्त एवं आत्मसंतोषी भी होने लगता है। जिन जीव-जन्तु

एवं जानवरों से हम डरा करते थे वे भी हमारे सखा जैसे हो जाते हैं। भगवान शंकर के शरीर में लिपटे हुए सर्प हमें इसी की शिक्षा देते हैं। सर्पों को भगवान की जितेन्द्रियता का भी प्रतीक बताया जाता है। उनके शरीर में लिपटे सभी सर्पों का मुख बाहर की तरफ होता है, अर्थात् वैराग्य रूपी धन से युक्त होने के बाद ये सर्प तुल्य इन्द्रियाँ हमें किसी भी प्रकार की पीडा नहीं देती हैं। अत्यंत प्रेम एवं आत्मीयता से लिपटे हुए ये सर्प अपना फन बाहर की तरफ मोड़े हुए ऐसे स्थित रहते हैं जैसे मानो किसी अति विशिष्ट खजाने की रक्षा कर रहे हों।

महादेवजी निश्चित रूप से अतिविशिष्ट खजाना ही हैं। वे ऐसे ज्ञान से युक्त हैं, जिसकी वजह से दूषण भी भूषण हो जाय। उनकी तीसरी आँख ज्ञान-चक्षु का प्रतीक हैं। वे प्रतिक्षण जीवन के तत्त्व के ज्ञान से युक्त रहते हैं। वे ज्ञानरूपी गंगा को अपने सिर पर धारण करते हैं। और समस्त विश्व के कल्याणार्थ अपनी एक लट से इस ज्ञानगंगा को इस लोक में प्रवाहित भी करते हैं।

तत्त्वज्ञान एवं कृतार्थता के धाम शिवजी की लोककल्याण की भावना तो इस प्रकार की है कि वे दूसरों के सुख के लिए अपने जीवन का भी मोह नहीं रखते हैं। उनका नीलकण्ठ उनके इस ही स्वभाव का द्योतक है।

भगवान शंकर प्रत्येक मनुष्य को निवृत्ति की प्रेरणा देते रहते हैं। इसके लिए वे कभी-कभी अपने विलक्षण शस्त्र त्रिशूल का भी प्रयोग करते हैं। त्रिशूल अर्थात् तीन ऐसे काँटे की तरह चूभने वाले शूल जो हमें सतत अपनी मूलभूत मान्यताओं का पुनरालोकन करवाने वाले निमित्त हैं। ये तीन शूल जीवन के तीन प्रसिद्ध संताप हैं अथवा माया के तीन गुण हैं। हम अपने आप को कितना भी

सुरक्षित एवं व्यवस्थित करने का प्रयास करें तो भी आध्यात्मिक, आधिभौतिक अथवा आधिदैविक निमित्तों से हमें कुछ न कुछ संताप प्राप्त होता ही रहेगा। हमें त्रितापों एवं माया के गुणों से तब तक पीड़ा मिलती रहेगी जब तक हम मायापति के भक्त नहीं बन जाते हैं। भगवान शंकर कठोर दिखते हैं, लेकिन अत्यन्त कोमल स्वभाव के हैं। वे हमारे सच्चे हितैषी हैं। हमें अपनी तरह भगवान निर्भीक, उदात्त एवं धन्य बना देते हैं। वे भक्तों की मनोकामनाओं को बहुत शीघ्र पूरा कर देते हैं। अतः इन मुक्तिदाता का एक नाम आशुतोष भी पड़ गया है।

[Back to Index](#)



ध्यान श्लोकाः

1. वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य-शशांक-वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्॥

देवी उमा के स्वामी, देवताओं के गुरु, जगत के अधिष्ठान, सर्प रूपी अलंकारों से विभूषित, यज्ञस्वरूप, मृग को धारण करने वाले, जीवों को पाश से मुक्त कराकर उनका पालन करने वाले पशुपति, सूर्य, चन्द्र, नेत्र रूपी तीन नेत्रों को धारण करने वाले, विष्णु के प्रिय, भक्तजनों के आश्रयरूप, स्वयं कल्याणस्वरूप, भक्तों के कल्याणकारी ऐसे भगवान शंकर की मैं वंदना करता हूँ।

2. कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि॥

जो कर्पूर के समान गौर वर्णवाले, करुणा के मूर्तिमान रूप, संसार के साररूप, शेषनाग रूप हार धारण करने वाले तथा जो भवानी सहित नित्य हृदयकमल में निवास करते हैं, उन महादेवजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

शिव प्रातः स्मरणा

1. प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं

गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।

खट्वांगशूल-वरदाभय-हस्तमीशं

संसार-रोगहरमौषधमद्वितीयम्॥

जो भवभय का हरण करने वाले हैं, देवताओं के स्वामी हैं, गंगाजी को जिन्होंने धारण किया हुआ हैं, वृषभ जिनका वाहन है, जो अम्बिकापति हैं, तथा हाथ में खट्वांग, त्रिशूल, वरदायक तथा अभय मुद्रा को धारण किये हैं, उन संसार रूपी रोग का हरण करने वाले अद्वितीय औषध रूप महादेवजी का मैं प्रातःकाल में स्मरण करता हूँ।

2. प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजावर्द्धदेहं

सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम्।

विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामम्

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्॥

जिनकी अर्धांगी भगवती पार्वती हैं, जो संसार की सृष्टि, स्थितिप्रलय का कारण हैं, जो आदिदेव हैं, विश्वनाथ हैं, विश्वविजयी हैं, और मनोहर हैं, उन संसार रूपी रोग का हरण करने वाले अद्वितीय औषध रूप महादेवजी को मैं प्रातःकाल में नमन करता हूँ।

3. प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं

वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।

नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्॥

जो अन्त से रहित हैं, आदिदेव हैं, वेदान्तगम्य हैं, पाप से अस्पृष्ट, महान हैं, जो नाम आदि भेदों से रहित, जन्मादि छह भावों से शून्य हैं, संसार रूपी रोग का हरण करने वाले अद्वितीय औषध रूप महादेवजी का मैं प्रातःकाल में भजन करता हूँ।

4. प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य

श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।

ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं

हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भो॥

जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल में उठकर इन श्लोकत्रय का पाठ करते हुए शिवजी का ध्यान करता है, वह अनेको जन्मों के संचित दुःखसमूहों से मुक्त होकर शिवजी के ही कल्याण पद को प्राप्त करता है।

[Back to Index](#)

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम्

1. सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोकारममलेश्वरम्॥

सौराष्ट्र में सोमनाथ और श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकारेश्वर अथवा अमलेश्वर,

2. परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दहृकावने॥

परली में वैद्यनाथ और डाकिनी में भीमशंकर, सेतुबन्ध में रामेश्वर, दहृकावन में नागेश्वर,

3. वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥

वाराणसी में विश्वेश्वर, गौतमी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय में केदारेश्वर, शिवालय में घृष्णेश्वर,

4. एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

जो भी मनुष्य प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल को इन बारह ज्योतिर्लिंग के नाम का पाठ करता है, तो इन लिंगों के स्मरण मात्र से उनके सात जन्मों में किये हुए पाप नष्ट होते हैं।

[Back to Index](#)

रुद्राष्टकम्

1. नमामीशमीशान-निर्वाणरूपं

विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।

अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं

चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥

ईशान, निर्वाणरूप, विभु, व्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरूप ईश को मैं नमन करता हूँ। जो अजन्मा है, निर्गुण, निर्विकल्प, इच्छारहित, चिदाकाशस्वरूप और आकाश में वास करने वाले (सर्वव्यापी), तथा दिशा रूपा वस्त्र को जिन्होंने धारण किया है उन श्रीरुद्र का भजन करता हूँ।

2. निराकारमोँकारमूलं तुरीयं

गिरा-ग्यान-गोतीतमीशं गिरीशम्।

करालं महाकालकालं कृपालं

गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्॥

जो निराकार हैं, ओँकार के मूलस्वरूप अर्थात् तुरीय हैं, वाणी, इन्द्रियां और बुद्धि से परे हैं, जो विकराल हैं, महाकाल के भी काल रूप हैं, कृपालु हैं, जो गुणों की निधि हैं, और संसार से परे है तथा संसार से पार लगाने वाले हैं, उन गिरीश को मैं नमन करता हूँ।

3. तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं

मनोभूत-कोटि-प्रभा-श्रीशरीरम् ।

स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चरुगंगा

लसद् भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥

जो हिमालय के समान गौरवर्ण तथा गम्भीर हैं, कोटि कामदेव की प्रभा और शोभा से युक्त जिनका शरीर हैं, जिनकी जड़ा से कलरव करती चरु गंगा बह रही है, जिनके ललाट में बालचन्द्रमा विलसित है और कण्ठ में सर्प हैं।

4. चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं

प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।

मृगाधीश-चर्माम्बरं मुण्डमालं

प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥

जिनके कानों में कुण्डल झूल रहे हैं, सुन्दर जिनकी भ्रुकुटी है और विशाल जिनके नेत्र हैं, जो प्रसन्न मुखवाले हैं, जो नीलकण्ठ हैं, दयालु हैं, व्याध के चर्म का वस्त्र धारण किये हैं, खोपड़ी की माला जिन्होंने धारण की हुई है, वे प्रिय शंकर सब के नाथ हैं, उनका मैं भजन करता हूँ।

5. प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं

अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।

त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं

भजेऽहं भवानी-पतिं भावगम्यम्॥

जो प्रचंड, श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मा, कोटि सूर्यसमान प्रकाशमान हैं, तीनों ताप को निर्मूल करने वाले हैं, जिनको भक्तिभाव से युक्त होकर ही जाना जा सकता है, उन त्रिशूलधारी भवानीपति का मैं भजन करता हूँ।

6. कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी

सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।

चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी

प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥

जो कलाओं से अतीत है, कल्याणस्वरूप हैं, कल्प का प्रलय करने वाले हैं, सदैव सज्जनों को आनंद देने वाले हैं, ऐसे हे त्रिपुरारि! चिदानन्दघन! मोहविनाशक! कामदेव के शत्रु! हे प्रभु! आप हम पर प्रसन्न होईए! आप प्रसन्न होइए!

7. न यावत् उमानाथ-पादारविन्दं

भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।

न तावत्सुखं शान्तिं सन्तापनाशं

प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥

जब तक मनुष्य उमापति शिवजी के चरणारविन्द का सेवन नहीं करता है, तब तक मनुष्य के इहलोक या परलोक के सन्ताप नाश नहीं होते हैं, न तो उसे सुख व शांति की प्राप्ति होती है। सर्व भूतों के अन्तर्यामी हे प्रभु! आप हम पर प्रसन्न होइए!

४. न जानामि योगं जपं नैव पूजां

नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्

जराजन्मदुःखौध-तातप्यमानं

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥

हे प्रभु! हे ईश! हे शम्भु! हम न तो योग जानते हैं, न जप या पूजा जानते हैं! हे शम्भु! हम तो सदा सर्वदा आपको ही नमस्कार करते हैं, जरा, जन्म, दुःख के समूह से अतिशय संतप्त ऐसे और आपके शरण में आए हुए हमारी रक्षा कीजिए।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हर-तुष्टये।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

शिवजी को प्रसन्न करने के लिए ब्राह्मण (गोस्वामी तुलसीदासजी) द्वारा कथित इस रुद्राष्टक का जो भी मनुष्य भक्तिपूर्वक पठन करता है, उनके उपर भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं।

[Back to Index](#)



शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्

1. नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय

भस्मांग-रागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय

तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥

जिनके कण्ठ में शेषनाग रूपी हार है, जिनके सूर्य, चन्द्र और अग्नि रूपा तीन नेत्र है, जिन्होंने अंग पर भस्म का लेपन किया है, दिशा जिनके वस्त्र हैं, उन नित्य, शुद्ध, महेश्वर, "न" कार स्वरूप शिवजी को नमस्कार।

2. मन्दाकिनी-सलिल-चन्दनचर्चिताय

नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।

मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय

तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥

जिनकी गंगाजल और चन्दन से अर्चना हुई है, मन्दारपुष्प तथा अन्य अनेकों पुष्पों से जिनकी सुंदर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति, प्रमथ गणों के स्वामी, महेश्वर, "म" कार स्वरूप शिवजी को नमस्कार।

3. शिवाय गौरी-वदनाब्जवृन्द

सूर्याय दक्षाध्वर-नाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय

तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥

जो परं कल्याणस्वरूप हैं, पार्वतीजी के मुखकमल को प्रफुल्लित करने के लिए जो सूर्यस्वरूप हैं, दक्ष के यज्ञ के जो विनाशक हैं, जिनकी ध्वजा में वृषभ का चिह्न है ऐसे सुषोभित नीलकण्ठ “श” कार स्वरूप शिवजी को नमस्कार।

3. वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य

मुनीन्द्र-देवार्चित-शेखराय।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय

तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥

वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनिगण तथा इन्द्रादि देवताओं के द्वारा जिनके मस्तक की पूजा हुई है, चन्द्र, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन “व” कार स्वरूप शिवजी को नमस्कार।

5. यक्षस्वरूपाय जटाधराय

पिनाक-हस्ताय सनातनाय

दिव्याय देवाय दिगम्बराय

तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥

जिन्होंने यक्ष का रूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक धनुष है, जो दिव्य, सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव “य” कार स्वरूप शिवजी को नमस्कार।

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

शिवजी के समीप इस पवित्र पंचाक्षर का जो पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है, तथा शिवजी के साथ आनन्द का अनुभव करता है।

शिवमात्रस्य पूजा

1. रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाकितं चन्दनम्।
जातिचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥

हे देव! हे दयानिधि! हे पशुपति! यह रत्नजड़ित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, अनेक प्रकार के रत्नों से विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तुरी की सुवास से सुवासित मलयगिरि का चन्दन, जाई चंपा, और बिल्वपत्र से रचित पुष्पमाला, धूप और दीप - यह सब मानसिक पूजा-उपहार आप कृपया ग्रहण कीजिए।

2. सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥

हे प्रभु! हमने नवीन रत्नजड़ित सोने के पात्र में मिश्रित खीर, दूध और दही सहित पांच प्रकार के व्यंजन, केला, शर्बत, अनेक प्रकार के शाक, कर्पूर से सुवासित, मीठा पवित्र जल और ताम्बूल इन सब को मन के द्वारा भक्तिपूर्वक रच कर आपके सामने प्रस्तुत किया है, अतः कृपा करके स्वीकार कीजिए।

3. छत्रं चामस्योर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं

वीणा-भेरि-मृदंग-काहलकला गीतं च नृत्यं तथा।

साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया

संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥

छत्र, चंवर, पंख्रा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरि, मृदंग, दुंदुभि इन समस्त वाद्यों का संगीत, गीत और नृत्य, साष्टांग प्रणाम तथा नानाविध स्तुति आपके प्रति संकल्प से ही समर्पित करता हूं, हे सर्वव्यापी भगवान! कृपा करके आप उन सबका स्वीकार कीजिए।

4. आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं

पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।

संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो

यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥

हे शम्भु! आप हमारी आत्मा हैं, हमारी बुद्धि पार्वतीजी है, हमारे प्राण एवं इन्द्रियां आपके सेवक गण हैं, हमारा देह आप का निवासस्थान है, सम्पूर्ण विषयों का उपभोग आपकी ही पूजा है, निद्रा समाधि स्थिति, पैर के द्वारा भ्रमण आप की परिक्रमा है, हम जो कुछ भी बोलते हैं, वह आप की स्तुति है। हम जो कुछ भी कर्म करते हैं, वह आप की ही आराधना रूप है।

5. करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा

श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्य

जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

हे करुणासागर! हे महादेव! हे शम्भु! हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, चक्षु और मन के द्वारा जो कुछ भी हमसे अपराध हुए हो, विहित या अविहित कार्य हुए हो, उन समस्त के लिए आप हमें क्षमा कीजिए। हे प्रभु! आप की जय हो।

[Back to Index](#)



शिव अपराध क्षमापन स्तोत्रम्

1. आदौ कर्मप्रसंगात् कलयतिकलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विष्मूत्रमेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव! हे महादेव! पूर्व जन्मों के कर्मों से माता की कोख में ले जाता है। वहां मल-मूत्र के बीच में स्थित जठराग्नि हमें बहुत जलाती है, वहां जो कुछ भी दुःख-दर्द, पीड़ा का अनुभव होता है, वह सब तो कौन बता सकता है! हे शम्भु इन सभी कष्टों के उपरान्त भी उस अवस्था में जिसे आपका स्मरण नहीं हो पाया, इसके लिए हम अपराधी हैं, हे शिव! आप कृपा करके हमें क्षमा कीजिए।

2. बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद् रुदनपरवशः शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव ! हे महादेव ! बचपन में दुःख की ही अधिकता थी, शरीर मल से मलिन रहता था, स्तनपान करने की सतत पिपासा रहती थी, और इन्द्रियों में भी कार्य करने का सामर्थ्य नहीं था। माया से उत्पन्न छोटे छोटे जन्तु भी हमें पीड़ा देते थे, अनेक रोगों के कारण मैं रोता ही रहता था। उस समय मुझसे भगवान् शंकर का स्मरण नहीं किया। इसके लिए हम अपराधी हैं, हे शिव! आप कृपा करके हमें क्षमा कीजिए।

3. प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पंचभिर्मर्मसन्धौ

दंष्ट्रो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्णः।

शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव! हे महादेव! जब मैं युवा हुआ, तब पांच विषय रूपी विष से युक्त सर्पों ने मेरे मर्मस्थान में दंश दिया। इससे मेरा विवेक नष्ट हुआ और मैं पुत्र, धन, स्त्री और स्वाद के सुख का भोग करने में ही लग गया। हाय! उस समय भी मान और गर्व से व्याप्त मेरे हृदय में आपके चिन्तन का कोई स्थान नहीं था। इसके लिए हमारा अपराधी है, हे शिव! आप कृपा करके हमें क्षमा कीजिए।

4. चार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः

पापै-रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।

मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यान-शून्यम्

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव! हे महादेव! वृद्धावस्था में इन्द्रियों की गति शिथिल हो गई है, और बुद्धि मंद पड़ गई है, फिर आधिदैविक आदि संताप, पापकर्म, रोग और वियोग से शरीर जर्जरित हो गया है, उस समय भी दुर्बल और दीन हुआ मेरा मन मोह और झूठी अभिलाषाओं के कारण भ्रमित हो रहा है, जिससे शिवजी के ध्यान से विहीन है। हमारा अपराधी है, हे शिव! आप कृपा करके हमें क्षमा कीजिए।

5. नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यं

श्रौते चार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे।

नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

प्रत्येक कदम पर अत्यन्त गहन और प्रत्यवाय के दुःखों से व्याप्त ऐसे स्मार्त कर्म ही जहां मेरे लिए सम्भव नहीं है, तो जो द्विजकुल के लिए विहित और सर्व के साररूप ब्रह्मप्राप्ति की और ले जाने वाले श्रौत कर्म की तो बात ही क्या करनी! धर्म में भी श्रद्धा नहीं है और उपनिषद् के श्रवण-मनन के विषय में विचार तक नहीं आता है, तो फिर निदिध्यासन की तो बात ही क्या करनी! हे शिव! हमारा यह अपराध आप कृपा करके क्षमा कीजिए।

6. स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहतं गांगतोयं

पूजार्थं वा कदाचिद् बहुतर-गहनात् खण्डबिल्वीदलानि।

नानीता पद्म माला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थम्

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

प्रतिदिन सवेरे स्नान की विधि के अनुरूप स्नान करके पूजा के लिए हम गंगाजल नहीं लाये, और नहीं गहन जंगल में से आपको अर्पित करने के लिए बिल्वपत्र लाये हैं, सरोवर में खिले कमल की माला या सुगंधित पुष्प भी आपके लिए नहीं लाए हैं। हे शिव! इसके लिए आप कृपा करके क्षमा कीजिए।

7. दुग्धैर्मध्वाज्य-युक्तैर्दधि-सित-सहितैः स्नापितं नैव लिंगम्

नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।

धूपैः कर्पूर-दीपै-र्विविध-रसयुतैः नैव भक्ष्योपहारैः

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव! हे महादेव! शहद, घी, दही, और शर्करा सहित दूध के द्वारा शिवलिंग को हमने कभी भी स्नान नहीं कराया, नहीं चन्दन का लेपन किया है। धतुरे के फूल, धूप, कर्पूरदीप और विविध रसयुक्त भोजनसामग्री के द्वारा पूजा भी नहीं की है। हे शम्भु! इसके लिए आप कृपा करके क्षमा कीजिए।

8. ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो

हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।

नो तप्तं गांगतीरे व्रतजपनियमैः रुद्रजाप्यैर्नवेदैः

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे महादेव! हे शम्भु! चित्त में आपका स्मरण करके ब्राह्मणों को न तो धन दान किया, न ही आपके एक लाख बीजमंत्रों के द्वारा अग्नि में आहुतियां दे कर यज्ञ किया। न तो व्रत-जप के नियम से रुद्रजप और वेदविधि से गंगा किनारे साधना करी है। हे शिव! इसके लिए आप कृपा करके हमें क्षमा कीजिए।

9. स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमय-मल्ल-कुण्डले सूक्ष्ममार्गे

शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।

लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शंकरं न स्मरामि

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे महादेव ! सूक्ष्ममार्ग से प्राप्त करने योग्य सहस्रदल कमल रूपी स्थान, जहां पहुंच कर प्राणसमूह प्रणवनाद में लीन हो जाता है और प्रकट वैभववाले, प्रकाशमान, परब्रह्मस्वरूप, लक्षणावृत्ति से जाना जा सके वैसे वेद के वाक्यार्थ जहां पर्यवसित होते हैं, ऐसे हृदयरूपी स्थान में रहकर भी अन्तर्यामी, कल्याणकारी आपका हमने स्मरण नहीं किया है। हे शिव ! हे शम्भु ! हमारा यह अपराध आप कृपा करके क्षमा कीजिए।

10. नग्नो निःसंग-शुद्धस्त्रिगुण-विरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्त-दृष्टि-र्विदित भवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्रीमहादेव शम्भो॥

हे शिव! हमने आपके नग्न, निःसंग, शुद्ध, त्रिगुणरहित स्वरूप का दर्शन नहीं किया, अपने अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश नहीं किया है, न तो नासिकाग्र में दृष्टि स्थिर की और नहीं शिवजी के गुणों को हमने जाना हैं। निष्पाप, कल्याणस्वरूप, उन्मनी अवस्था के द्वारा हमने स्मरण नहीं किया है। हे महादेव ! हमारा यह अपराध आप क्षमा कीजिए।

11. चन्द्रोद्भासित-शेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषित-कण्ठ-कर्ण-विवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्ति-त्वक्कृत-सुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारेहरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलां अन्यैस्तु किं कर्मभिः॥

हे मन ! चन्द्रकला से सुषोभित जटावाले, काम कंदर्प को हरने वाले, गंगाधर, कल्याण स्वरूप शिवजी है, जिनके कण्ठ और कर्ण सर्पों से सुशोभित हैं, नेत्र में से अग्नि प्रकट हो रही है, हाथी के चर्म का सुन्दर वस्त्र धारण किया है तथा जो तीनों लोक के सार व उनके पाप के विनाशक हैं, ऐसे शिवजी में मोक्षप्राप्ति के लिए सम्पूर्ण चित्तवृत्तियों को जोड़ दें। अन्य कर्मों से क्या लाभ!

12. किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्र-कलत्र-मित्र-पशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत् क्षण भंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्॥

हे मन ! यह धन, घोड़े, हाथी अथवा राज्यप्राप्ति से क्या?
या फिर पुत्र, पत्नी, मित्र, पशु, देह या गृह से भी क्या फायदा?
इन सब की क्षणिकता जानकर उन सबका दूर से ही त्याग कर।
आत्मानुभव के लिए गुरुवचनानुसार श्री पार्वतीवल्लभ को ही भज ले।

13. आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम्

प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद् भक्षकः।

लक्ष्मीस्तोयतरंग-भंग-चपला विद्युच्चलं जीवितम्

तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना॥

यह जीवन देखते ही देखते खतम हो रहा है, प्रतिदिन
यौवन क्षीण हो रहा है, गए हुए दिन कभी लौट कर नहीं आते,
सचमुच काल ही इस जगत का भक्षक है। लक्ष्मी जल की तरंग के
जैसी चंचल है। अतः हे शरणागत वत्सल! मैं आपके प्रति शरणागत
हूँ। आप हमारी अब रक्षा कीजिए। आप ही रक्षा कीजिए।

14. करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा

श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व

जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

हे करुणासागर! हे महादेव! हे शम्भु! हाथ, पैर, वाणी,
शरीर, कर्म, कर्ण, चक्षु और मन के द्वारा जो कुछ भी हमसे
अपराध हुए हों, विहित या अविहित कार्य हुए हों, उन समस्त के
लिए आप हमें क्षमा कीजिए। हे प्रभु! आप की जय हो।

शिव ताण्डव स्तोत्रम्

1. जटाटवी-गलज्जल-प्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंग-तुंग मालिकाम्।
डमड्-डमड्-डम-त्रिनादवड्-डमर्वयं
च्चार चण्डताण्डव तनोतु नः शिवः शिवम्॥

अपने जटारूप अरण्य में से बहते गंगाजल के प्रवाह से पवित्र हुए कण्ठ में, सर्पों की लटकती हुई विशाल माला को धारण करके जिन्होंने डमरू के डम डम निनाद से युक्त प्रचंड तांडव नृत्य किया, वह शिवजी हमारा कल्याण करें।

2. जटाकटा-हसम्भ्रम-भ्रम-त्रिलिम्पनिर्झरी

विलोलवीचि-वल्लरी-विराजमान-मूर्द्धनि।
धगद्धग-द्धग-ज्जवल-लललाट-पट्टपावके
किशोरचन्दशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥

जटा रूपी कटाह में तीव्र गति से घूमती हुई गंगाजी की चंचल तरंग रूपी लताओं से जिनका मस्तक सुशोभित है, जिनके भालप्रदेश में धक्, धक् धक् आवाज के साथ अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही है, जिनके मस्तक पर द्वितीया का चन्द्रमा सुशोभित हो रहा है, वैसे भगवान शंकर के प्रति हमारी सतत प्रीति रहे।

3. धरा-धरेन्द्र-नन्दिनी-विलास-बन्धुबन्धुर

स्फुरद्दिगन्त-सन्तति-प्रमोद-मानमानसे।
कृपाकटाक्ष-धोरणी-निर्द्ध-दुर्धरापदि
क्वचिद्-दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥

गिरिराज किशोरी पार्वती के विलासकाल में प्रयुक्त चूडामणि से समस्त दिशाओं को प्रकाशित होता देखकर जिनका मन आनंदित हो रहा है, जिनकी निरन्तर कृपादृष्टि से घोर आपत्ति का भी निवारण हो जाता है, ऐसे दिगम्बर तत्त्व में मेरा मन स्थिर हो।

4. जटा-भुजंग-पिंगल-स्फुरत्-फणा-मणिप्रभा

कदम्ब-कुंकुमद्रव-प्रलिप्त-दिग्वधूमुखे।

मदान्ध-सिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीय-मेदुरे

मनो-विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तारि॥

जिनकी जटा में स्थित सर्पों की फन के मणियों में से स्फुरित पिंगल रंग का प्रकाशपुंज मानो कि दिशारूप अंगनाओं के मुख पर कुंकुम राग का अनुलेप कर रहा है, मतवाले हाथियों के चर्म का उत्तरीय धारण किया है, जो फरफर लहरा रहा है, इन चर्म की वजह से जो स्निग्ध वर्ण के हुए हैं, उस भूतनाथ में मेरा मन विनोद करे।

5. सहस्रलोचन-प्रभृत्य-शेषलेख-शेखर

प्रसून-धूलि-धोरणी-विधूसरान्घ्रि-पीठभूः।

भुजंगराज-मालया निबद्ध-जाटजूटकः

श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥

इन्द्र आदि समस्त देवताओं के मस्तक में रहे कुसुम के रज से जिनकी चरणपादुका धूसरित हो रही है, शेषनाग रूपी हार से जिनका जटाजूट बन्धा हुआ है वह भगवान् चन्द्रशेखर हमारे लिए चिरस्थायी सम्पत्ति के साधक हो।

6. ललाट-चत्पर-ज्वलद्धनंजय-स्फुलिंगभा

निपीत-पंचसायकं नमन्निलिम्प-नायकम्।

सुधा-मयूख-लेखया विराजमान-शेखरं

महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥

जिन्होंने ललाट रूप वेदी पर प्रज्ज्वलित अग्नि के किरणों के तेज से कामदेव का नाश किया था, जिनको देवराज इन्द्र सदा नमस्कार करते हैं, चन्द्र की कला से जिनका मस्तक सुशोभित है, वह विशाल ललाट, जटाधारी भगवान शिव हमें सम्पत्ति प्रदान करें।

7. कराल-भाल-पट्टिका-धगद्ध-गद्धग-ज्ज्वलद्

धनंजयाहुती-कृत-प्रचण्ड-पंचसायके।

धराधरेन्द्र-नन्दिनी-कुचाग्र-चित्र-पत्रक

प्रकल्पनैक-शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥

जिन्होंने अपने विकराल भालप्रदेश पर धक्, धक् धक् जलते अग्नि में प्रचंड कामदेव को जला दिया था, उन कामहारी गिरिराजकिशोरी के स्तन पर पत्रभंगिमा की रचना करने वाले जो एक मात्र कलाकार है ऐसे त्रिलोचन शिवजी में हमारी रति हो।

8. नवीन-मेघ-मण्डली-निर्बुद्ध-दुर्धरस्फुरत्

कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबद्ध-कन्धरः।

निलिम्पनिर्झरी-धर-स्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥

नवीन मेघमंडल से घिरा हुआ अमावस्या की मध्य रात्रि के समय प्रसारित घने अंधकार से जिनका कंठ अंकित हुआ है, वह गजचर्मधारी, चन्द्रमा से सुशोभित कांतिवाले जगत को धारण करने वाले गंगाधर मेरी संपत्ति का विस्तार करें।

9. प्रफुल्लःनील-पंकज-प्रपंचकालिम-प्रभा

वलम्बि-कण्ठ-कन्दली-रुचि-प्रबन्ध-कन्धरम्।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मग्नच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥

जिनका कंठप्रदेश प्रफुल्लित नीलकमल के समूह की श्यामवर्णीय प्रभा का अनुसरण करने वाली केले की कलिका के सौंदर्य चिह्न से सुशोभित है, वैसे स्मरहर, त्रिपुरान्तक, भवनाशक, यज्ञविनाशक, गजनाशक, अंधकासुर का नाश करने वाले वह मृत्युंजय शिवजी का मैं भजन करता हूँ।

10. अखर्व-सर्व-मंगला-कला-कदम्ब-मंजरी

रसप्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतम्।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मग्नान्तकं

गजान्तकान्ध-कान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥

जो अभिमनरहित, सर्वमंगलस्वरूपा देवी पार्वतीजी की कलारूप कदंबमंजरी के मकरंद स्तोत्र की वृद्धि को प्राप्त माधुरी का पान करने वाले मधुप (भौरें) है, वैसे स्मरान्तक, पुरान्तक, भवान्तक, यज्ञान्तक, गजान्तक, अंधकान्तक शिवजी का मैं भजन करता हूँ।

11. जयत्वदभ्र-विभ्रम-भमद्-भुजंगमश्वसत्

विनिर्गमत्-क्रम-स्फुरत्-कराल-भाल-हव्यवाट्।

धिमि-द्धिमि-द्धिमिद्वनन्-मृदंग-तुंग-मंगल

ध्वनिक्रम-प्रवर्तित-प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः॥

मस्तक पर अत्यंत वेग से घूम रही भुजंग की फुंकार से जिनके ललाट की भयंकर अग्नि सतत भयंकर स्व करती हुई फैल रही है, धिमि, धिमि, धिमि ध्वनि करते मृदंग के गंभीर मंगल घोष का क्रम अनुसार जिनका प्रचंड तांडवनृत्य हो रहा है, उन भगवान शिवजी की जय हो।

12. दृषद्विचित्र-तल्पयो-भुजंग-मौक्तिक-स्रजो

गरिष्ठरत्न-लोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।

तृणारविन्द-चक्षुषोः प्रजामही-महेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥

पत्थर और सुंदर बिछौने में, सर्प और मोती की माला में, बहुमूल्य रत्न और मिट्टी के ढेर में, मित्र और शत्रुपक्ष में, तृण और कमलनयना तरुणी में, प्रजा और चक्रवर्ती राजा में, इन समस्त विषमताओं में समान भाव वाले शिवजी को मैं कब भजूंगा !

13. कदा निलिम्प-निर्झरी-निकुंज-कोटरे वसन्

विमुक्त-दुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्।

विलोल-लोल-लोचनो ललाम-भाललग्नकः।

शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥

अपनी कुमति का त्याग करके गंगाजी की तटवर्ती निकुंज की गुफामें रहते, मस्तक पर दो हाथ जोड़े अश्रुपूर्ण विह्वल नेत्रों के साथ चन्द्रशेखर में चित्त एकाग्र करके 'शिव' मंत्र का उच्चारण करता मैं कब सुखी होऊंगा!

14. इमं हि नित्यमेव-मुक्त-मुत्तमोत्तमं स्तवं

पठस्मरन्-ध्रुवन्-नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं

विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम्॥

जो भी मनुष्य इस प्रकार से रचे गए इस उत्तमोत्तम स्तोत्र का नित्य पठन, स्मरण और उच्चारण करता रहता है, वह सदा विशुद्धि को प्राप्त करता है और शीघ्र ही देवताओं के गुरु श्रीसदाशिव में दृढ भक्ति प्राप्त करता है। उनकी अनिष्ट गति नहीं होती, क्योंकि भगवान् शंकर का चिन्तन प्राणीवर्ग के मोह को नाश करने वाला है।

15. पूजावसानसमयेदशवक्त्रगीतं

यः शम्भु-पूजनपरं पठति प्रदोषे।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्र-तुरंगयुक्तां

लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥

सायंकाल पूजा समाप्ति के समय रावण के द्वारा रचे गए इस शंभु-पूजन सम्बन्धी स्तोत्र का जो पाठ करता है, वह मनुष्य को भगवान् शंकर रथ, श्रेष्ठ हाथी, घोड़े से युक्त सदैव स्थिर रहने वाली लक्ष्मी प्रदान करते हैं।

[Back to Index](#)



शिव महिम्नः स्तोत्रम्

1. महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधि गूणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥

हे महादेव ! आपकी महिमा की उत्कृष्ट अवधि को न जानने वाले के द्वारा की गई स्तुति यदि अपर्याप्त है तो ब्रह्माजी आदि सर्वज्ञ की वाणी भी आपके विषय में अपर्याप्त ही है, अतः अपनी बुद्धि की मर्यादा के अनुरूप गुण गाने वाले सभी क्षमायोग्य हैं। फिर मेरा भी इस स्तोत्र के विषय का आरम्भ, अनिन्दनीय ही मानना चाहिए।

2. अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः।
अतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः।
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥

आपकी महिमा मन और वाणी से परे है, ब्रह्म से भिन्न समग्र प्रपंच का निषेध द्वारा जिनका श्रुति भी संकोचपूर्वक प्रतिपादन करती है, वह सगुण या निर्गुण की महिमा किसके द्वारा गाई जा सकती है! आपके कितने गुण हैं, तथा निर्गुण के बारे में भी कौन जान सकता है। परन्तु अर्वाचीन (लीला स्वरूप) स्वरूप में किसका मन नहीं प्रवेश करेगा? अथवा किसकी वाणी आकृष्ट नहीं होगी?

3. मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतः

तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरागुरोर्विस्मय पदम्।

मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः

पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥

हे महादेव! निरतिशय मधुर वेद रूप वाणी का निर्माण करने वाले आपको देवताओं के गुरु बृहस्पति की वाणी भी क्या विस्मित कर सकती है? तो फिर हे पुरमथन ! आपके गुणकथन के पुण्य से मेरी यह वाणी पवित्र हो उस हेतु से, इस स्तोत्रकथन में मेरी बुद्धि प्रवृत्त हुई है।

4. तवैश्वर्यं यद् तज्जगदुदय रक्षा प्रलयकृत्

त्रयी-वस्तु-व्यस्तं त्रिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।

अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं

विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः॥

हे वरद! तीनों वेद जिनका प्रतिपादन करते हैं, सत्त्वादि गुणों के भेद से भिन्न, ब्रह्मादि तीन प्रसिद्ध मूर्तियों में जो विभक्त हुए हैं, जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करने के सामर्थ्य रूप आपका ऐश्वर्य प्रत्यक्ष होने पर भी उनको खण्डित करने के लिए इस जगत में कुछ जड़ बुद्धि वाले हतभागी नास्तिक लोग असुन्दर फिर भी सुन्दर प्रतीत होने वाली निन्दात्मक वाणी आपके ऐश्वर्य के विषय में प्रलाप करती रहती है।

5. किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं

किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।

अतर्क्यैश्वर्यं त्वयि अनवसर दुःस्थो हतधियः

कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखस्यति मोहाय जगतः॥

कौन सी इच्छा से प्रेरित होकर, कैसा शरीर धारण करके, किसका आधार लेकर, किन साधनों के प्रयोग से, किस उपादान में से उन ईश्वर ने तीनों लोक का सृजन किया है? जिनका ऐश्वर्य ऐसे तर्कों से परे है, वैसे आपके सम्बन्ध में समस्त तर्क अस्थान होने पर भी कुछ कुतर्की दुष्ट बुद्धिवाले लोग इस तरह जगत को मोहित करने के लिए वाचाल बन जाते हैं।

6. अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगताम्

अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।

अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरः

यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेस्त इमे॥

हे अमरवर ! अवयववान होने पर भी क्या यह लोक जन्महीन हो सकता है? क्या आप सृष्टा के बगैर ही इस जगत की उत्पत्ति हो सकती है? यदि ईश्वर के बजाय जीव ने इसका सृजन किया है तो भुवनों की उत्पत्ति के लिए उनके पास भी क्या सामग्री थी? आप सर्वशक्तिमान के बगैर इस जगत की उत्पत्ति आदि सम्भव ही नहीं है। इसलिए आप के प्रति शंका करनेवाले वास्तव में मंद बुद्धि ही हैं।

7. त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति

प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिल नाना पथजुषां

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

कोई कहता है यह श्रेष्ठ है, कोई कहता है वह श्रेष्ठ है, ऐसे रुचि की विविधता के कारण वेद, सांख्य, योग, पाशुपत, वैष्णव आदि अनेकविध सम्प्रदाय हैं। किन्तु हे अमरवर! समस्त नदियों का गन्तव्य जैसे एक समुद्र होता है, वैसे सरल और वक्र ऐसे अनेकों पंथों का अनुसरण करने वाले मनुष्यों का गन्तव्य आप ही हैं।

8. महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तंत्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्-भू-प्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषय मृगतृष्णां भ्रमयति॥

हे वरदायक ! वृद्ध बैल, खट्वांग, परशु, चर्म, भस्म, सर्प तथा खोपड़ी यह ही मात्र आपके निर्वाह के लिए आपके पास सामग्री है। तथापि देवतागण मात्र आपके कृपाकटाक्ष मात्र से ही उन उन दिव्य समृद्धि को धारण करते हैं। यह सत्य है कि निज स्वरूप में रमण करने वाले को विषय रूपी मृगजल मोहित नहीं कर सकता।

9. ध्रुवं कश्चित् सर्व सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन्निहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥

हे पुरमथन! कोई इस आपके सृजन रूप जगत को नित्य कहता है, तो कोई क्षणिक तथा कोई इसे नित्य और अनित्य ऐसे क्रिद्ध धर्मवाला है, ऐसा कहते हैं। यह सब सुनकर विस्मित हुआ मैं भी आपकी स्तुति करने में लज्जित नहीं होता। क्योंकि मेरी वाचालता सही में निर्लज्ज है।

10. तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरंचिर्हरिर्धः
परिच्छेत्तुं यातावनल-मनल-स्कन्ध-वपुषः।
ततो भक्ति-श्रद्धाभरगुरु-गूणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥

तेजपुंज के समान आकृति वाले आपके ऐश्वर्य को नापने ब्रह्माजी उपर तथा श्रीविष्णु नीचे प्रयत्नपूर्वक गए किन्तु वे सफल नहीं हुए। जब भक्ति और श्रद्धा से परिपूर्ण अतिशय प्रार्थना उन्होंने की तब आप उनके समक्ष स्वयं प्रकट हुए। हे गिरिश ! आपकी सेवा क्या फलित नहीं होती?

11. अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं

दशास्यो यद् बाहूनभूत रणकण्डूपरवशान्।

शिरः पद्मश्रेणी-रचित-चरणाम्भोरुहबलेः

स्थिरायास्त्वद्-भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥

हे त्रिपुरहर! अपने मस्तक रूप कमल का हार आपके चरणकमल में अर्पित करने रूप भक्ति के फलस्वरूप रावण ने अनायास ही तीनों लोक को शत्रुहीन, निष्कण्टक बना दिया, तथा युद्ध करने के लिए उनकी बीसों भुजाएं सदैव बेचैन रहती थीं। यह आपके प्रति स्थिर भक्ति का ही प्रभाव है।

12. अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनं

बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।

अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठ-शिरसि

प्रतिष्ठा त्वयि-आसीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥

आपकी सेवा से ही प्राप्त हुआ अतुल बलवान भुजाओं को आपके निवासस्थान कैलास पर्वत पर आजमाने वाले इस रावण को आपके अंगूठे के अग्रभाग को बिना प्रयास के जरा सा दबाने पर पाताल में भी स्थिति नहीं मिल पाई। ऐश्वर्ययुक्त होकर कृतघ्न मनुष्य अवश्य मोहित हो जाता है।

13. यदृद्धिं सूत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजन-विधेय-त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं सम्यग्-वरिसितरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥

हे वरद! तीनों लोक को दास जैसा बनाने वाले बाणासुर के सामने इन्द्र की समृद्धि भी मंद नजर आती थी। आपके चरण की भक्ति करने वाले बाणासुर के लिए यह आश्चर्यमय नहीं है, क्योंकि आपके समक्ष मस्तक झुकाने से किसकी उन्नति नहीं होती!

14. अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षय-चकित-देवासुर-कृपा
विधेयस्याऽऽसीद् यस्त्रिनयनविषं संहतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥

हे त्रिनयन ! अकाले ब्रह्माण्ड का नाश होने की सम्भावना से भयभीत देवता और दानव पर कृपा से प्रेरित होकर हलाहल विष का पान करने वाले आपके कंठ में जो नीला दाग हो गया है, वह आपकी शोभा में और भी अभिवृद्धि करता है। आश्चर्य है कि ब्रह्माण्ड के भय का नाश करना जिनका व्यसन है, ऐसे आपके उपर विकार भी प्रशंसनीय हो जाता है।

15. असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितर-सुर-साधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥

हे ईश ! जिन कामदेव के विश्वविजयी बाण - देव, दानव तथा मानव सहित विश्वभर में कहीं से भी अपना कार्य सिद्ध किये बगैर वापिस नहीं लौटते हैं, उन कामदेव ने आपको भी जब अन्य देव के समान माना तब वह केवल स्मृतियोग्य शरीरवाला रह गया। क्योंकि जितेन्द्रिय का अनादर करना कभी हितकारी नहीं होता।

16. मही पादाघाताद् ब्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्-भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रहगणम्।
मुहुर्घौदौस्थ्यं यात्यनिभूत जटा-ताडित-तटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥

आप जगत की रक्षा करने के लिए ही तांडवनृत्य करते हैं, तब आपके चरणों के आघात से पृथ्वी अचानक संदिग्ध स्थिति को प्राप्त हो जाती है, भगवान विष्णु का स्थान भी आपकी गोलाकार घुमती हुई भुजाओं की चोट से टूटते नक्षत्रों वाला संदिग्ध हो जाता है, आपकी बिखरी हुई जटाओं की चोट से स्वर्ग भी मानो दुस्वस्था को प्राप्त करता है। आश्चर्य है कि आप परमेश्वर की महत्ता कितनी बक्र होती है!

17. वियद्ब्यापी तारागणगुणित फेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगत् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमिति
अनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥

आकाश में व्याप्त ताराओं के समूह से वृद्धि को प्राप्त फेन के उद्गम की शोभावाला जल प्रवाह आपके मस्तक पर मात्र बिन्दु के समान अति सूक्ष्म प्रतीत हो रहा था। वह जल प्रवाह से यह जगत समुद्र रूप कंगनवाला द्वीप ही मानो बन गया। इससे आपका दिव्य देह कितना विशाल है, उसका अनुमान मात्र कर सकते हैं।

18. रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो

स्थाङ्गो चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।

दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिः

विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥

त्रिपुरासुर रूपी घास के तिनके के समान को भस्म करने की इच्छा से युक्त आपको पृथ्वीरूपा रथ, ब्रह्माजी रूप सारथि, पर्वतश्रेष्ठ मेरु रूपी धनुष, सूर्य और चन्द्र रूप रथ के दो पहिए और चक्रधारी विष्णुभगवान रूपी बाण ऐसे आडम्बर की क्या आवश्यकता है! सचमुच! अपने पर अधीन पदार्थों के द्वारा क्रीडा करने वाले ईश्वर के संकल्प कभी परतंत्र नहीं होते।

19. हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोः

यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्र-कमलम्।

गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा

त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥

हे त्रिपुरहर! विष्णु भगवान आपके चरणों में एक हजार कमलपुष्पों की भेंट समर्पण करने के द्वारा पूजा कर रहे थे, उसमें से एक कमल की कमी होने पर अपने नेत्ररूपी कमल को निकालकर आपके चरणों में उन्होंने अर्पित किया। भक्ति का यह उत्कर्ष सुदर्शन चक्र के रूप में परिणत हुआ जो सदैव तीनों लोक की रक्षा करने के लिए सावधान रहता है।

20. क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां

क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति फुरुषाराधनमृते।

अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं

श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः॥

यागादि कर्म का लय होने पर यागादि कर्म करने वाले यजमान को फल देने के लिए आप कर्मफलदाता ही जगे रहते हैं। लय को प्राप्त जड़ कर्म चेतन परमात्मा की आराधना के बगैर कैसे फल दे सकता है? इसलिए वेदों के प्रति श्रद्धावान मनुष्य यागादि सत्कर्मों का फल देने वाले आपको ही ध्यान में रखकर कर्म में तत्पर होत है।

21. क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां
ऋषीणामात्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा-विधुरमभिचाराय हि मखाः॥

हे शरणद ! यज्ञक्रिया के अनुष्ठान में कुशल और शरीरधारी जीवों के स्वामी ऐसे दक्ष प्रजापति यजमान थे। ऋषिगण ऋत्विक् थे और देवता गण सभासद थे। फिर भी यज्ञ का फल देने का जिनका स्वभाव है, वैसे आपने दक्ष के यज्ञ का नाश किया। क्योंकि श्रद्धा के बगैर किये हुए यज्ञ निश्चित ही यजमान के नाश का ही कारण बनता है।

22. प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिमयिषु-मृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेयातिं दिवमपि सपत्रकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥

हे नाथ ! जिसने हरिणि का रूप धारण किया ऐसी अपनी ही पुत्री के साथ हिरण के शरीर से उन कामुक ब्रह्माजी बलपूर्वक रमने की इच्छा कर रहे थे। आपके बाण से उनका शरीर विंध गया हो ऐसी व्यथा को प्राप्त और भयभीत हुए ब्रह्माजी को हाथ में धनुष धारण किए आपका शिकारी के जैसा वेग आज भी नहीं छोड़ता। वह बाण मानो आज भी पीछा कर रहा है।

23. स्वलावण्याशंसा-धृत-धनुषमहाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटनाद्
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥

हे पुरमथन! हे यमनिरत! आपने पुष्पायुध धारी कामदेव को देखते ही देखते घास के तिनके के समान कामदेव को भस्म कर दिया था, उसे देखने पर भी पार्वतीजी जिनको आपके अपने वामभाग में स्थान दिया था, उस घटना को आधार बनाकर तथा अपने प्रशंसनीय लावण्य को निमित्त बनाकर यह कल्पना करें कि आप स्त्रीवश है, तो वह ठीक ही है। अहो! हे वरद! युवतियां स्वभाव से ही नासमझ होती हैं।

24. स्मशानेष्याक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥

हे स्मरहर ! स्मशान में आनंदसहित क्रीडा करना, पिशाचों का संग होना, चिता की भस्म का लेपन करना और मनुष्य की खोपड़ी की माला पहनना - इस प्रकार की आपकी रहन सहन भले ही अमंगल हो किन्तु हे वरद ! आपका स्मरण करने वाले भक्तों के लिए आप परं मंगलमय ही हैं।

25. मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥

शमादिसम्पन्न यति लोग विधिपूर्वक प्राण का नियंत्रण करके अन्तर्मुख हुए मन को हृदयकमल में निरुद्ध करके जिस तत्त्व का अपरोक्ष अनुभव करते हैं, और उससे मानों कि अमृतमय सरोवर में गोते लगाएं हो ऐसे बाह्य सुख से विलक्षण निरतिशय सुख का अनुभव करते हैं। उनके रोम रोम पुलकित होते हैं और नेत्र हर्ष के अश्रु से भरी हुई है, वह तत्त्व जिनका यति लोग इस प्रकार से अनुभव करते हैं, वह श्रुतिप्रसिद्ध तत्त्व आप ही है।

26. त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः

त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिर्मात्मा त्वमिति च।

परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं

न विदमस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥

आप ही सूर्य है, आप ही चन्द्रमा हैं, आप वायु हैं, आप अग्नि हैं, आप जल, आकाश, पृथ्वी हैं। तथा आप ही जीवात्मा हैं। परिपक्व बुद्धिवाले मनुष्य आपके विषय में इस प्रकार परिच्छिन्नतापूर्वक की वाणी भले ही बोलें, किन्तु हम तो इस जगत में आप जो नहीं हैं, ऐसे किसी भी तत्त्व को नहीं जानते हैं।

27. त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्

अकाराद्यैर्वर्णै स्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृतिः।

तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरक्लृन्धानमणुभिः

समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥

हे शरणद ! अकारादि तीनों वर्ण के द्वारा तीन वेद, तीन अवस्थाएं, तीन लोक, और तीन देवों को प्रतिपादन करता, तथा समस्त विकारों से परे ऐसे आपके तुरीय स्वरूप को सूक्ष्म ध्वनि के द्वारा लक्षित करता 'ओम्' पद आपके समस्त और व्यस्त अर्थात् अधिष्ठान और अध्यारोप इन दोनों स्वरूप का प्रतिपादन करता है।

28. भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहान्
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योऽस्मि भवते॥

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, सहमहान् तथा भीम और ईशान इस प्रकार यह आठ नाम हैं। इसमें प्रत्येक नाम आप ही के हैं, ऐसा श्रुति प्रतिपादन करती है। ऐसे सर्व के शरणरूप आप ईश्वर को मैं सर्वभाव से प्रणाम करता हूँ।

29. नमो नेदिष्ठाय प्रियदेव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः॥

निर्जनप्रदेश जिन्हें प्रिय है, ऐसे हे परमेश्वर! अत्यन्त निकटवर्ती, ऐसे आपको नमस्कार! अत्यन्त दूरवर्ती, आपको भी नमस्कार! हे कामदेव को भस्म करने वाले ! सूक्ष्मतर और महत्तर! आपको नमस्कार! हे त्रिनेत्र! सबसे वृद्ध तथा सब से युवा! आपको नमस्कार! सर्वात्मरूप ऐसे आपको नमस्कार और जो परेक्ष है तथा जो अपरोक्ष है, वैसे हे सर्वरूप! आपको हमारा नमस्कार!

30. बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्विक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे तत्संहारे हराय नमो नमः॥

विश्व की उत्पत्ति के लिए रजोगुण आधिक्य ब्रह्ममूर्ति! आपको बारबार नमस्कार! लोगों का संहार करने के लिए तमोगुण आधिक्य वाले हे रुद्रमूर्ति! आपको बारबार नमस्कार! लोगों के सुख के लिए सत्त्वाधिक विष्णुमूर्ति रूप! आपको बारबार नमस्कार! हे त्रिगुणातीत मायारहित, ज्योतिस्वरूप मंगलमूर्ति! आपको बारबार नमस्कार!

31. कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं

क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।

इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्

वरद चरणयोस्ते वाक्य पुष्पोपहारम्॥

हे वरद! कहां मेरा अल्पविषय और अविद्यादि पांच क्लेश के अधीन चित्त और कहां आपकी इन गुणों की सीमाओं का अतिक्रमण करने वाली नित्य विभूति? इस प्रकार से भयभीत हुए मुझे बलपूर्वक उत्साहित करके भक्ति ने ही आपके चरणों में पूजा के लिए वाक्य रूपी अंजलि अर्पित की।

32. असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे

सुरत्नवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं

तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥

महासागर के पात्र में नीलगिरि पर्वत के समान स्याही से कल्पवृक्ष की शाखा रूप कलम लेकर पृथ्वीरूपा कागज में आपकी महिमा को यदि देवी सरस्वती स्वयं सतत लिखती रहें तो भी हे ईश! इसका कोई अन्त नहीं हो सकता।

33. असुरसुरमुनीन्द्रै-रर्चितस्येन्दुमौले:

ग्रथित गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।

सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥

सर्व गुणों में श्रेष्ठ पुष्पदन्त नामक गंधर्व ने देव, दानव तथा महान ऋषि-मुनियों के द्वारा पूजित और जिनके गुण वेदों में अच्छी प्रकार से ग्रथित हैं, ऐसे निर्गुण और सगुण स्वरूप भगवान् चन्द्रशेखर का यह दीर्घ छन्दों से युक्त मनोहर स्तोत्र की रचना हुई।

34. अहरहरनवद्यं धूर्जटे स्तोत्रमेतत्

पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।

स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र

प्रचुरतरुधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥

जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरणपूर्वक, परं भक्ति से शिवजी के इस स्तोत्र का प्रतिदिन पठन करता है, वह मृत्यु के उपरान्त शिवलोक में शिवजी के समान हो जाता है तथा इस लोक में बहुत धनवान्, आयुष्मान्, पुत्रवान् और यशस्वी होता है।

35. महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।

अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥

महेश्वर से श्रेष्ठ और कोई देवता नहीं है, महिम्नः स्तोत्र से श्रेष्ठ कोई अन्य स्तुति नहीं है, अघोर मंत्र से श्रेष्ठ और कोई मंत्र नहीं है तथा सद्गुरु से परं और कोई तत्त्व नहीं है।

36. दीक्षा दानं तपस्तीर्थ-स्नानं यागादिकाः क्रियाः।

महिम्नः स्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥

दीक्षा, दान, तप, तीर्थस्नान और यज्ञयागादि क्रियाओं में से कोई भी महिम्नः स्तोत्र के पठन की सोलहवीं कला के समान भी नहीं है।

37. कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः

शिशुशशिवधर्मौलेर्देवदेवस्य दासः।

स खलु निज महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्

स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥

पुष्पदन्त नामक सर्व गंधर्वों का राजा, जटामुकुट में बालचन्द्रमा को धारण करने वाले भवान महादेव का सेवक था, महादेवजी के क्रोध से ही अपनी महिमा से भ्रष्ट हुए पुष्पदन्त ने महादेवजी की महिमा के इस परं दिव्य स्तोत्र की रचना की और शिवजी की कृपा से पुनः अपनी महिमा में स्थित हुआ।

38. सुरमुनिवरपूज्यं स्वर्गमोक्षैक हेतुं

पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।

व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः

स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥

श्रेष्ठ देवता तथा मुनियों से सत्कार को प्राप्त तथा स्वर्ग और मोक्ष के कारण रूप ऐसे श्री पुष्पदन्त ने रचे हुए इस अमोघ स्तोत्र का जो कोई मनुष्य हाथ जोड़कर एकाग्र चित्त होकर पाठ करता है, वह किन्नरों के द्वारा स्तुत्य शिवजी के समीप ही जाता है।

39. आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥

गन्धर्वरचित यह स्तोत्र आदि से अंत तक पवित्र, अनुपम, मनोहर, मांगलिक और ईश्वर का ही वर्णन करता है।

40. इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥

यह वाङ्मयी पूजा भगवान् शिव के चरणों में अर्पित की, उनसे देवाधिदेव, सदाशिव मुझ पर प्रसन्न हो।

41. तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥

हे महेश्वर! आप के स्वरूप को हम नहीं जानते हैं। हे महादेव आप जैसे भी हैं, आपको हमारा बार बार नमस्कार।

42. एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥

जो मनुष्य प्रतिदिन एक बार, दो बार, या तीन बार इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह सर्व पापों से मुक्त होकर शिवलोक में पूजित होता है।

43. श्रीपुष्पदन्त-मुख-पङ्कज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥

श्रीपुष्पदंत के मुखकमल में से निकले इस भगवान शंकर को प्रिय और पापहारी स्तोत्र को जो मनुष्य कंठस्थ करके एकाग्र चित्त होकर पाठ करता है उन पर भूतपति भगवान महादेव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

५५. यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।

तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

हे देव ! प्रमादवशात् इस स्तोत्र में जो वर्ण और शब्द अशुद्ध उच्चारण वाला हो या मात्रा में क्षति वाला हुआ हो तो उन सबको आप क्षमा कीजिए। हे परमेश्वर ! आप प्रसन्न होईए।

[Back to Index](#)



शिव पूजा विधि

सामग्री:- तांबे का पंचपात्र, छोटी प्लेट; आचमनी; कलश; थाली (अभिषेक के लिए) नारियेल; पंचामृत-दही, दूध, शहद, घी, शक्कर। दीपक, आरती के लिए एक दीपक, कर्पूर, फूल, वस्त्र, चन्दन, अक्षत, कुंकुम, इलायची, दक्षिणा, जनेउ, नैवेद्य के लिए मिठाई एवं फल।

पूर्व पूजा

आचमनीयम्:- ओम् अच्युताय नमः, ओम् अनन्ताय नमः,
ओम् गोविन्दाय नमः।

तीन बार आचमन से हाथ में जल लेकर पीएं।

आसन शुद्धि:-

पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥
आसन के चारों ओर जल छिड़के।

देह शुद्धि:-

अपवित्रं पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेद् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
जल लेकर शरीर पर छिड़के।

आत्म पूजा:- देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।

त्यजेद् अज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

अपने आपको चंदन अथवा कुंकुम का टीका लगाएं

प्राणायाम:- ॐ का दीर्घ उच्चारण के साथ प्राणायाम

गणपति ध्यानम्:- ॐ गणानां त्वा गणपति ॐ हवामहे। कविं
कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः
शृण्वन्नूतीभिस्सीदसादनम्। ॐ महागणपतये नमः।

गणेशजी का ध्यान करें।

दीपक, अगरबत्ती जलाकर दाहिने हाथ में अक्षत, फूल और
जल लेकर बायें हाथ से ढककर इस प्रकार से पूजा का
संकल्प करें।

संकल्प:- शुभे शोभने मुहूर्ते आद्यब्रह्मणः द्वितीये परार्धे,
श्वेतवराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, कलियुगे, प्रथमे पादे, भारत
वर्षे, भरत खण्डे, वर्तमाने नक्षत्रे,ऋतौ,मासे,
पक्षे,तिथौ, ..वासरे, अहं मम उपात्तदुःख क्षयद्वारा, श्री
परमेश्वर प्रीत्यर्थ ज्ञानवैराग्य सिद्धयर्थ, समस्त मंगल अवाप्त्यर्थ,
(महाशिवरात्रि पर्व निमित्तं) श्रीमन्महादेवपूजन ध्यानावहनादि
षोडशोपचारैः करिष्ये।

कलश पूजा:- जल भरे कलश के उपर कुंकुम आदि लगाकर
दाहिने हाथ से ढककर,

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गंगायै नमः, ॐ यमुनायै नमः, ॐ गोदावर्यै नमः, ॐ
सरस्वत्यै नमः, ॐ नर्मदायै नमः, ॐ सिन्धवे नमः, ॐ
कावेर्यै नमः। सर्वाणि तीर्थाणि आवाहयामि। पुष्पैः पूजयामि।

कलश के जल से चारों ओर पूजा की सामग्री आदि पर

प्रोक्षण करते हुए शुद्धि करें।

गुरु ध्यानम्:- श्री गुरुदेव का ध्यान करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुस्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

महादेव ध्यानम्:- महादेवजी का ध्यान करें।

ॐ नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय
त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकालाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय
नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय
नमः।

उत्तर पूजा

1. आवाहन:- आवाहयामि देवेशं आदि मध्यान्त वर्जितम्।

आधारं सर्वलोकानां आश्रितार्ति विनाशनम्॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आवाहयामि।

आचमन में जल लेकर सामने रखे पात्रमें छोड़े तथा
शिवलिंग को नीचे रखें अभिषेकपात्र में सीपित करें।

2. आसन:-पुष्प में आसन की भावना के साथ समर्पित करें।

आसनं गृह्यतां ईश निर्मलं स्वर्ण निर्मितम्।

आधारं सर्वलोकानां अंधकासुर सूदनम्॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आसनं समर्पयामि।

3. पाद्य:- आचमन में जल में पुष्प, चन्दन एवं अक्षत
डालकर समर्पित करें।

पाद्यं गृहाण भगवन् पावनं परमेश्वर।
पार्वती हृदयानन्द पापं सर्व व्यपोह्य॥
ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। पाद्यं समर्पयामि

4. अर्घ्यः- पाद्यं की तरह ही अर्घ्य प्रदान करें।
अर्घ्यं गृहाण गिरिश गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
अघमज्ञानमखिलं नीलकण्ठ निवारय॥
ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि

5. आचमनीयम्:- शुद्धजल आचमन में लेकर समर्पित करें
गृहाणाचमानार्थाय गंगादि सरिदाहृतम्।
विमलं जलमीशान व्याधीन्मे विनिवारय॥
ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि।

6. पंचामृत स्नानम् एवं अभिषेकः-

पंचामृतं गृहाणेदं पन्नगेश्वर भूषण।
पंचवक्त्रं नमस्तुभ्यं पंचपापानि नाशय॥
पंचामृत-स्नानं समर्पयामि।

क. पयःस्नानम्:- कामधेनू समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पय स्नानार्थमर्पितम्॥
पयःस्नानं समर्पयामि। (दूध से स्नान कराएँ)

ख. दधिस्नानम्:- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशीप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

दधिस्नानं समर्पयामि। (दही से स्नान कराएं)

ग. घृतस्नानम्:- नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

घृतस्नानं समर्पयामि। (घी से स्नान कराएं)

घ. मधुस्नानम्:- त्रूपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मधुस्नानं समर्पयामि। (शहद से स्नान कराएं)

च. शर्करा स्नानम्:- ईक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।

मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्करा स्नानं समर्पयामि। (शक्कर से स्नान कराएं)

छ. अभिषेकम्:- शिवमहिम्न आदि स्तोत्र अथवा किसीभी शिवस्तोत्र का पाठ करते हुए जल व दूध से अभिषेक करें।

ज. शुद्धोदक स्नानम्:-

गंगाक्लिन्न जटाभार सोमसोमार्थशेखरा

सहयजादि सरित्तोयैः स्नानं कुरु सदाशिव॥

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान)

7. वस्त्रम् :- गजचर्म-धरानन्त गरलांकित कन्धरा

दुकूलं गृह्यतां देव दुर्गतिं मे निवारय॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

8. उपवीतम् :- उपवीतं गृहाणेश पवित्रं परमं शुभम्।

उमाकान्त नमस्तुभ्यं उत्तमं देहि मे फलम्॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। उपवीतं समर्पयामि।

9. गन्धम् :- गंधं कुंकुमं संयुक्तं मृगनाभिं समन्वितम्।

महादेव गृहाणेश भूति भषित विग्रह॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। गन्धं समर्पयामि।

10. अक्षतान् :- अक्षतानक्षत विभो नक्षत्रेश विभूषण।

शुद्ध स्फटिकसंकाश स्वामिन् स्वीकुरु शंकर॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

11. पुष्पाणि :- मल्लिकाकुन्द मन्दार कमलादीनि शंकर॥

पुष्पाणि बिल्वपत्राणि गृहाण करुणानिधे॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

108 नाम से अर्चना

12. धूपम् :- चन्दनागुरुस्तूरी चन्द गुग्गुलू संयुतम्।

धूपं गृहाण भगवन् धूतपाप नमोऽस्तुते॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। धूपम् आघ्रापयामि।

(अगरबत्ती जलाएं)

13. दीपम् :- दीपं गृहाण देवेश चर्तित्रय समन्वितम्।

अन्धकारे नमस्तुभ्यं अज्ञानं विनिवारय॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। दीपम् दर्शयामि।

14. नैवेद्यम् :- ओम् भूर्भुवःस्वः तत्सवतिर्वरिण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ओम् प्राणाय स्वाहा,
अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा,
उदानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा।

शाल्यन्नं पायसादीनि मोदकांश्च फलानि च।

नैवेद्यं संगृहाणेश नित्यतृप्त नमोस्तुते॥

अमृतोपस्तरणमसि। अमृतापिधानमसि।

मध्ये मध्ये आचमनीयं समर्पयामि। नैवेद्यं निवेदयामि॥

5. पूगीफलम् :- पूगीफल समायुक्तं नागवल्ली दलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तम् ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।

16. स्तुति :- महादेवजी के किसी भी स्तोत्र का पाठ करें।

नीराजनम् (आरती):-

ओम् न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारका।

नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्व

तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

महादेवजी की आरती करें।

पुष्पांजलि :- नमोऽस्त्यनन्ताय सहस्रमूर्तये।

सहस्रपादाक्षि शिरोरूपाहवे ॥

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते।

सहस्रकोटि युगधारिणे नमः॥

नमस्कारान् :- महादेव नमस्तेऽस्तु मन्मथारे नमोऽस्तुस्ते।

अमृतेश नमस्तुभ्यं आश्रितार्थं प्रदायिने॥

नमस्करोमि।

प्रार्थना :- त्राहि मां देव देवेश तरुणेन्दु शिख्रामणे।

ईप्सितं देहि मे देव दयाराशे नमोऽस्तुते॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः। छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त
राजोपचारान् समर्पयामि॥ पुष्पैः पूजयामि॥

क्षमा :- आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

ओम् श्रीमन्महादेवाय नमः॥

॥ हरिः ओम् तत्सत्॥

[Back to Index](#)



शिव अष्टोत्तरशत नामावलि

ॐ शिवाय नमः।

ॐ महादेवाय नमः।

ॐ शम्भवे नमः।

ॐ पिनाकिने नमः।

ॐ शशिशेखराय नमः।

ॐ वामदेवाय नमः।

ॐ विरूपाक्षाय नमः।

ॐ कपर्दिने नमः।

ॐ नीललोहिताय नमः।

ॐ शंकराय नमः।

ॐ शूलपाणये नमः।

ॐ खट्वांगिने नमः।

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः।

ॐ शिपिविष्टाय नमः।

ॐ अंबिकानाथाय नमः।

ॐ भीमाय नमः।

ॐ परशुहस्ताय नमः।

ॐ मृगपाणये नमः।

ॐ श्रीकण्ठाय नमः।

ॐ भक्तवत्सलाय नमः।

ॐ भवाय नमः।

ॐ शर्वाय नमः।

ॐ त्रिलोकेशाय नमः।

ॐ शितिकण्ठाय नमः।

ॐ शिवा-प्रियाय नमः।

ॐ उग्राय नमः।

ॐ कपालिने नमः।

ॐ कामारये नमः।

ॐ अन्धकासुरसूदनाय..

ॐ गंगाधराय नमः।

ॐ ललाटाक्षाय नमः।

ॐ कालकालाय नमः।

ॐ कृपानिधये नमः।

ॐ वृषभारूढाय नमः।

ॐ भस्मोद्भूत-विग्रहाय

ॐ साम प्रियाय नमः।

| | |
|-----------------------|-----------------------|
| ॐ जटाधराय नमः। | ॐ स्वरमयाय नमः। |
| ॐ कैलासवासिने नमः। | ॐ त्रयीमूर्तये नमः। |
| ॐ कवचिने नमः। | ॐ अनीश्वराय नमः। |
| ॐ कठोराय नमः। | ॐ सर्वज्ञाय नमः। |
| ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः। | ॐ परमात्मने नमः। |
| ॐ वृषांकाय नमः। | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय |
| ॐ हविषे नमः। | ॐ दुर्धर्षाय नमः। |
| ॐ यज्ञमयाय नमः। | ॐ गिरीशाय नमः। |
| ॐ सोमाय नमः। | ॐ गिरिशाय नमः। |
| ॐ पंचवक्त्राय नमः। | ॐ अनघाय नमः। |
| ॐ सदाशिवाय नमः। | ॐ भुजंगभूषणाय नमः। |
| ॐ विश्वेश्वराय नमः। | ॐ भर्गाय नमः। |
| ॐ वीरभद्राय नमः। | ॐ गिरिधन्वने नमः। |
| ॐ गणनाथाय नमः। | ॐ गिरिप्रियाय नमः। |
| ॐ प्रजापतये नमः। | ॐ कृत्तिवाससे नमः। |
| ॐ हिरण्यरेतसे नमः। | ॐ पुरारातये नमः। |
| ॐ भगवते नमः। | ॐ अहयेबुध्याय नमः। |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः। | ॐ दिगम्बराय नमः। |
| ॐ मृत्युंजयाय नमः। | ॐ अष्टमूर्तये नमः। |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः। | ॐ अनेकात्मने नमः। |
| ॐ जगद्ब्यापिने नमः। | ॐ सात्विकाय नमः। |

| | |
|------------------------|----------------------|
| ॐ जगद्गुरवे नमः। | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः। |
| ॐ व्योमकेशाय नमः। | ॐ शाश्वताय नमः। |
| ॐ महासेनजनकाय नमः। | ॐ खण्डपरशवे नमः। |
| ॐ चरुचिक्रमाय नमः। | ॐ अजाय नमः। |
| ॐ रुद्राय नमः। | ॐ पाशविमोचकाय नमः। |
| ॐ भूतपतये नमः। | ॐ मृडाय नमः। |
| ॐ स्थाणवे नमः। | ॐ पशुपतये नमः। |
| ॐ देवाय नमः। | ॐ हराय नमः। |
| ॐ महादेवाय नमः। | ॐ पूषदन्तभिदे नमः। |
| ॐ अव्ययाय नमः। | ॐ अव्यग्राय नमः। |
| ॐ हरये नमः। | ॐ सहस्राक्षाय नमः। |
| ॐ तारकाय नमः। | ॐ सहस्रपदे नमः। |
| ॐ परमेश्वराय नमः। | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। |
| ॐ भगनेत्रभिदे नमः। | ॐ अनन्ताय नमः। |
| ॐ अव्यक्ताय नमः। | ॐ तारकाय नमः। |
| ॐ दक्षाध्वरनाशकाय नमः। | ॐ परमेश्वराय नमः। |

[Back to Index](#)



आरती - १

ओम् जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश ।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश।

ओम् हर हर हर महादेव।

1. कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुंजति मधुकर पुंजे कुंजवने गहने।
कोकिल कूजति खेलति हंसावलिललिता।
रचयति कलाकलापं (2) नृत्यति मुदसहिता॥
ओम् हर हर हर महादेव।
2. तस्मिन् ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे (2) गौरी मुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषा रंजित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित (2) प्रणमति ते शीर्षम्॥
ओम् हर हर हर महादेव।
3. विबुधवधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता।
किन्नर गानं कुरुते सप्तस्वर सहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत थै थै मृदंग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं (2) मधुरं नादयते।
ओम् हर हर हर महादेव।
4. रुण्ण चरणे रचयति नूपुर मुज्ज्वलितम्।
चक्रावर्ते भ्रमयति (2) कुरुते तां धिक्तान्।
तां तां लुपचुप तां तां तालं नादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं (2) लास्यकतां कुरुते॥
ओम् हर हर हर महादेव।

5. कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधर कण्ठयुतम्।
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरूत्रिशूलपिनाकं (2) करधृतनूकपालम्॥
ओम् हर हर हर महादेव।
6. शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा (2) वेदऋचां पठते।
अतिमृदु चरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं (2) ईशमभिनत्वा॥
ओम् हर हर हर महादेव।
7. मुण्डै रचयति मालां पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजा(2) रूपमतिललितम्।
सुन्दर सकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपम् (2) तापत्रयहरणम्।
ओम् हर हर हर महादेव।
8. ध्यानं आरतिसमये हृदये इति कृत्वा।
रामं त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।
संगीतमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति (2) भक्त्या यः शृणुते॥
ओम् हर हर हर महादेव।

[Back to Index](#)



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

KAPWING

आरती – २

जय शिव ओंकारा, ओम् हर शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अब्द्धांगी धारा॥ हर हर हर महादेव॥

एकानन चतुरानन, पंचानन राजें
हंसानन गरुडासन, वृषवाहन साजें॥ हर हर....

दौ भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहैं ।
तीनों रूप निरग्रता, त्रिभुवन जन मोहैं ॥ हर हर....

अक्षमाला बनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद सोहैं, भाले शशिधारी॥ हर हर....

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाधाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे॥ हर हर....

कर मध्ये च कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकरता जगहरता, जगपालन कर्ता॥ हर हर....

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका॥ हर हर....

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, वांछित फल पावै॥ हर हर....

[Back to Index](#)

